४३५४

मानव जाति के सेवाव्रती
राजा महेन्द्रप्रताप

५४२



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक चाँद 'सरदार' 'प्रणवीर'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजा महेन्द्रप्रताप



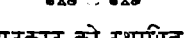

भारतवर्ष में अपनी सरकार को स्थापित हुए २५ वर्ष हुए हैं, जिसकी रजत-जयन्ती अभी (१५ अगस्त १९७२) को मनाई गई थी। इसके पहले देश पर अङ्गरेजों का अधिकार था। यद्यपि भारतवासियों का स्वतन्त्रता-संग्राम सन् १९०५ से जोरों के साथ चल रहा था, पर उस समय यहाँ के कर्ता-धर्ता विधाता ब्रिटिश शासक ही थे, जिनका मुख्य उद्देश्य इस देश के साधनों से इङ्गलैंड की सत्ता और उद्योग-धन्धों को मजबूत बनाना था। इस लिये वे भारतवासियों की न्याययुक्त आकांक्षाओं को भी सदा दबाते रहते थे और स्वराज्य-प्राप्ति के लिए किये गए किसी भी आन्दोलन का जवाब दमन द्वारा ही देते थे। उस समय देश-विदेश में कहीं भी भारत की आवाज नहीं सुनी जाती थी और न एक राष्ट्र के रूप में विश्व में उसका कोई स्थान था।

पर पाठकों को यह जानकर कुछ आश्चर्य होगा कि ऐसे जमाने में भी आज से सत्तावन वर्ष पहले एक "अस्थायी भारत सरकार" का संगठन भारतीय सीमा से थोड़ी ही दूर पर अफगानिस्तान की भूमि पर किया गया था, जिसने कई वर्ष तक विभिन्न देशों को प्रतिनिधि-मण्डल भेजे बहुत-सी घोषणाएँ जारी कीं, रूस की विभिन्न सरकारों के साथ कुछ समझौते किये और अफगानिस्तान की सरकार के साथ एक सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर भी किये ! यद्यपि साधनों की कमी और संसारव्यापी हलचल के कारण यह सरकार बहुत खुल कर अधिक काम नहीं कर सकी, तो भी इतिहास में इसका नाम मौजूद है। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट द्वारा नियुक्त "रौलेट कमेटी" की रिपोर्ट में जिसके विरुद्ध महात्मा गान्धी ने सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुरू किया था, इस अस्थायी सरकार की चर्चा की गई है तथा भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के सम्बन्ध में लिखे अन्य ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख पाया जाता है। भारत की "अस्थायी सरकार" (प्रॉवीजनल गवर्नमेंट) के मुख्य प्रवर्तक और अध्यक्ष राजा महेन्द्रप्रताप थे। इसकी स्थापना काबुल के [illegible] नामक राज भवन में १ दिसम्बर १९१५ को हुई थी। इसका [illegible] करते [illegible] राजा साहब की आत्मकथा (My Life Story of fifty-five years) में लिखा है—

"पहली दिसम्बर का दिन आ पहुँचा। आज शाम को आठ बजे मेरे कमरे में एक छोटी-सी पार्टी दी जाने वाली थी। मेरे जर्मन, तुर्की और भारतीय मित्रों को निमन्त्रित किया गया था। पर उनमें से चार व्यक्तियों के सिवाय और किसी को इस समारोह का वास्तविक उद्देश्य मालूम न था। वे यही जानते थे कि मैं अपनी सालगिरह का उत्सव मना रहा हूँ। पर यह एक बड़ी ही गुप्त बात थी। इस पार्टी में केवल नौ-दस व्यक्ति बुलाये गये थे। कार्य आरम्भ होने पर मैंने खड़े हो कर कहा—

"मित्रो ! अब मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि आपको यहाँ आने का कष्ट क्यों दिया गया ? मैं अपनी सालगिरह मनाने जैसी बातों में विश्वास नहीं रखता। जीवन एक निरन्तर चलने वाला प्रवाह है, जिसका न कोई आरम्भ है न अन्त है। इस रात्रि को हम "प्रथम भारतीय अस्थायी सरकार" स्थापित करने को एकत्रित हुए हैं। मैं इसके अध्यक्ष पद की शपथ लेता हूँ और हमारे मित्र मौलाना बर्कतुल्ला प्रधान मन्त्री की।"

राजा साहब ने आगे चलकर लिखा है कि "कप्तान नीडरमेयर (जर्मन) डा० मुनीरबेग (टर्की) और कप्तान काजिम बेग ने इसका समर्थन किया और धन्यवाद दिया। उस समय हम यह नहीं जानते थे कि हमारा यह सामान्य प्रयत्न आगे चल कर महत्त्वपूर्ण और प्रसिद्ध बन जायगा। उस समय हमको इस बात पर बहुत कम विश्वास था कि अफगानिस्तान के अमीर हबीबुल्लाह, जो अङ्गरेजों के पक्षपाती प्रसिद्ध थे, गैर सरकारी तौर पर भीतर ही भीतर हमारे सहायक बन जायेंगे। मेरे मतानुसार हमने उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय जो कुछ किया उसको स्पष्ट रूप से "गुप्त षड़यन्त्र" भी नहीं कहा जा सकता। हम अफगानिस्तान इसीलिए गये थे कि भारत में स्थापित ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध कार्य करें। टर्की और जर्मनी की सरकारोंने हमको सहायता दी क्योंकि वे इङ्गलैंड से युद्ध कर रही थीं। इसमें षड़यन्त्र की कोई बात ही नहीं थी।"

उपर्युक्त मीटिङ्ग के कुछ ही समय पश्चात् १६१६ के आरम्भ में ही एक दिन काबुल के एक बड़े सरकारी कमरे में एक बड़े टेबिल के चारों तरफ अफगानिस्तान के अमीर हबीबुल्लाह खाँ उनके दोनों शाहजादे, दरबारी और और हमारे 'इण्डो—तुर्को—जर्मन' (भारतीय—तुर्की—जर्मनी) मिशन के सदस्य बैठे थे। उसी समय एक सन्धिपत्र लिखा गया और उस पर दस्तखत किये गये। इसके बाद मैंने अमीर के कान में कहा—"क्या यह एक बढ़िया बात न होगी कि हम रूस को अपनी तरफ मिलाने की कोशिश करें। इससे मीटिङ्ग में एक नये उत्साह की लहर दौड़ गई, क्योंकि अमीर ने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया और मुझसे प्रधान मन्त्री के साथ इसकी पूरी योजना बनाने को कहा।"

"भारतीय अस्थायी सरकार" की योजना विशेष रूप से भारतवर्ष की सीमा से मिले हुए राज्यों—जैसे अफगानिस्तान, रूस, चीन, नेपाल आदि से सम्पर्क स्थापित करके उनकी सहायता से भारत पर आक्रमण करने की थी। पर एक तो उस समय प्रथम विश्वयुद्ध की हलचल के कारण एक देशसे दूसरे को जा सकना ही बड़ा कठिन और खतरनाक था, फिर इन सभी देशों के मध्य में स्थित पामीर का प्लेटो यात्रा की दृष्टि से बड़ा बीहड़ और अत्यन्त ठण्डा स्थान था; और अन्तिम बात यह कि उस समय तक ब्रिटिश साम्राज्य का दबदबा और रौब समस्त संसार में व्याप्त था। सब देशों में उसके जासूस विरोधियों की हलचल का पता लगाते घूमते रहते थे। इस लिये गुप्त रूप से कुछ मदद करने देने के सिवाय किसी का यह साहस न था कि ब्रिटिश सरकार का खुल कर विरोध कर सके। इसलिये आस-पास के देशों में कुछ दौड़धूप करने के पश्चात् सन् १६२० में जब अफगानिस्तान के नये शासक अमानुल्लाह खाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने अँगरेजों से सन्धि करली तो यह 'अस्थायी सरकार' समाप्त कर दी गई ।

नेपाल होकर भारतीय विद्रोह का प्रयत्न—

कुछ समय पश्चात् राजा महेन्द्र प्रताप ने विचार किया कि चीन और तिब्बत होकर नेपाल पहुँचा जाय और भारतीय क्रान्तिकारियों से संबंध स्थापित करके भारत पर आक्रमण की कोई योजना बनाई जाय । यद्यपि यह विचार सन् १९२३ में काबुल में ही किया गया था पर इसकी वास्तविक तैयारी अप्रेल १९२५ में सान्फ्रांसिस्को (अमरीका) में की गई । इसमें मुख्य सहयोग गदर पार्टी का था; जिसकी स्थापना सन् १९११ में परम देशभक्त ला० हरदयाल ने की थी । हरदयालजी बहुत बड़े विद्वान् भी थे और उनको अमेरिका के एक कालिज में प्रोफेसर नियुक्त किया गया था । कुछ समय पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने अमरीकन सरकार से शिकायत करके हरदयालजी को गिरफ्तार करा दिया; पर वहाँ के निवासियों पर उनकी योग्यता का इतना प्रभाव पड़ चुका था कि उन्होंने सरकारी कार्यवाही का जोरदार विरोध करके इनको छुड़वा लिया । लाला हरदयाल ३० वर्ष तक योरोप अमरीका के विभिन्न देशों में रहकर भारत में स्थापित अँगरेजी शासन की जड़ उखाड़ने में लगे रहे । अमरीका से तो उन्होंने हजारों सिख देशभक्तों को प्रेरणा देकर भारत में सशस्त्र क्रांति करने के लिये भिजवाया था । राजा महेन्द्र प्रताप से भी उनकी भेंट योरोप पहुँचते ही हुई । वे सबसे पहले प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा के पास पहुँचे, जो उस समय स्वीजरलैण्ड में आये थे । श्यामजी ने उनको लाला हरदयाल से बात करने को कहा । इस सम्बन्ध में राजा साहब की "आत्मकथा" का वर्णन पाठकों को अवश्य ही मनोरञ्जक प्रतीत होगा—

"स्वीजलैण्ड के जेनेवा नगर में पहुँचते ही मैं और हरिश्चन्द्र श्यामजी कृष्ण वर्मा को ढूँढ़ने लगे । एक मिश्र निवासी युवक ने उनका पता बतलाया । सन्ध्या के समय हम उनसे मिले तो उन्होंने लाला हरदयाल के पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



जाने को कहा। उसी रात को हम टैक्सी द्वारा उनके पास पहुँचे। वे शहर से बाहर बहुत दूर रहते थे और जब हम पहुँचे उस समय अपने भोजन के लिये आलू भून रहे थे। युद्ध के सम्बन्ध में बातें शुरू होने पर मैंने उनसे यही कहा—'आप जर्मनी क्यों नहीं जाते ?' उन्होंने उत्तर दिया—'वहाँ कुछ अन्य युवक काम कर रहे हैं।' उन्होंने मुझे जर्मन राजदूत का पता दिया और मैंने उससे भेंट की।"

इसी गदर पार्टी की एक मीटिङ्ग में (अप्रेल १९२५) तिब्बत-अभियान का निर्णय किया गया और उसी समय खर्च के लिये बारह हजार डालर का चन्दा जमा हो गया। राजा महेन्द्रप्रताप कुछ सहायकों को लेकर जापान तथा चीन होते हुए तिब्बत की सीमा पर सिन-फू नामक स्थान पर पहुँच गये। तिब्बत वैसे ही बहुत ठण्डा देश है; फिर उस समय जाड़े का मौसम शुरू हो चुका था। इस लिये डेरा-तम्बू, चमड़े के बने गर्म कपड़ों, घोड़े, खच्चर आदि सभी आवश्यक बातों की व्यवस्था की गई। ये लोग १ नवम्बर को तिब्बत में घुसे और छै महीने से अधिक वहाँ रहकर पुनः चीन वापस आये। राजा साहब ने तिब्बत के अनेक उच्च अधिकारियों, लामाओं से मित्रता करली और उनके जरिये सफलता के लिये प्रयत्न किया। दालाई लामाने उनको आशीर्वाद दिया; पर नेपाल तक यात्रा करने की अनुमति दे सकने में असमर्थता बतलाई। उन्होंने अपने पत्र में लिखा—

"आपके पत्रों से हमको यह प्रतीत हो गया कि आप एक बुद्धिमान और परोपकारी मनोवृत्ति के व्यक्ति हैं। हम यह भी जानते हैं कि आपके आदर्श धर्मानुकूल हैं। पर हमारे देश के कानून के अनुसार इस प्रकार के मामलों का निर्णय प्रधान शासक स्वयं नहीं करता वरन् उसे "महा समिति" के पास भेज दिया जाता है। अब उसने निर्णय किया है कि अभी तिब्बत और चीन के बीच जो झगड़ा पैदा हुआ था उसकी मध्यस्थता ब्रिटिश सरकार ही कर रही है। इसके सिवाय ब्रिटिश भारत की सीमा हमसे मिली हुई है और हमारे देश के समाचार व्यापारियों द्वारा वहां पहुँचते रहते हैं। इस परिस्थिति में "महा समिति" आपका ल्हासा आना उपयुक्त नहीं समझती।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार तिब्बत के शासकों ने अँग्रेजों के नाराज होने का ख्याल करके राजासाहब को देश के भीतर अधिक दूर तक नहीं आने दिया। वैसे दालाई लामा ने उनकी भेजी दो रायफल और चार सौ कारतूसों को भेंट स्वीकार कर ली और अपनी तरफ से एक रेशमी दुपट्टा, कुछ सोना और चांदी तथा आठ थान बढ़िया ऊनी कपड़े के भेजे।

यह एक रहस्य की बात है कि यद्यपि राजा महेन्द्र प्रताप का स्पष्ट सम्बन्ध उस समय भारत के क्रान्तिकारी दल या विशेष नेता से नहीं था, फिर भी तिब्बत तथा नेपाल आने के कार्यक्रम की खबर यहाँ पहुँच गई थी। इस पर क्रांतिकारी दलों के कई कार्यकर्ताओं ने उनसे नेपाल में भेंट करके उनकी योजना में सहयोग देने का विचार किया। इस प्रकार प्रयत्न करने वालों में एक श्री राधामोहन गोकुल जी भी थे जो सन् फरवरी १९२६ में शिव रात्रि के अवसर पर कानपुर से नेपाल गये थे। शिवरात्रि के अवसर को चुनने का कारण यह था कि उस अवसर पर कुछ दिन के लिए काठमाण्डू के पशुपति नाथ महादेव के दर्शन पूजा के लिए नैपाल सरकार की तरफ से 'परमिट' का नियम स्थगित कर दिया जाता था और सब कोई, जिनमें अधिकाँश साधु संन्यासी होते थे, पशुपतिनाथ की यात्रा को जा सकते थे। राधामोहन जी उसी यात्रियों की भीड़ के साथ काठमाण्डू पहुँच गये और वहाँ बीस-पच्चीस दिन ठहरे भी रहे। पर जब उनको पक्का पता लग गया कि राजा साहब नैपाल तक नहीं पहुँच सके, तब वे पुनः कानपुर लौट आये। उसी समय मुझको (इस ट्रैक्ट के लेखक को) बताया कि राजा महेन्द्र प्रताप से क्राँतिकारी योजना के विषय में सलाह करने नैपाल गया था पर उनसे भेंट न हो सकी।

अभी दो दिन पहले ही राजासाहब से मैंने स्वयं इस सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने कहा कि "मुझे तो उस समय यहाँ से कोई समाचार मिल ही नहीं सकता था। पर कुछ समय पहले बम्बई में भी मुझसे किसी ने कहा था कि वहाँ का कोई व्यक्ति सन् १९२६ में मुझसे भेंट करने नैपाल गया था।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तिब्बत के अभियान में असफल होकर राजा साहब फिर चीन लौट गये और अँग्रेजी सरकार पर आक्रमण करने की दूसरी योजना बनाने लगे। तिब्बत से लौटने का वर्णन करते हुए उन्होंने अपनी 'आत्मकथा' में साफ शब्दों में कहा है कि "सच्ची बात यही है कि मेरा इरादा भारतवर्ष को अँग्रेज विरोधी राष्ट्रों से घेरने का और चारों तरफ सीमाओं पर अपनी चौकियाँ कायम करने का था। अफगानिस्तान में तो बादशाह अमानुल्लाह हमारे पक्के दोस्त थे ही, मैंने सोचा था कि तिब्बत और नैपाल में भी वैसे ही दोस्त प्राप्त करने की चेष्टा क्यों न की जाय? यही हमारे मिशन का उद्देश्य था"

इसमें सन्देह नहीं कि राजा महेन्द्रप्रताप घर से भारत की स्वाधीनता का कार्यक्रम लेकर ही निकले थे। उन्होंने सन् १९१४ में योरोप को जाते समय अपने बड़े भई कुँवर बल्देव सिंह के यह पूछने पर कि 'अब कब तक लौटोगे?' यही उत्तर दिया था कि 'अब मैं अपने सहायकों की सेना के साथ ही वापस आऊँगा।' यद्यपि उस समय ब्रिटिश साम्राज्य संसार की सबसे बड़ी शक्ति मानी जाती थी, संसार के सभी राष्ट्र उससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दबते थे। इसलिए जिन राष्ट्रों ने राजासाहब का समर्थन किया या किसी तरह की सहायता दी वह गुप्त रीति से ही दी। पर उसी के आधार पर राजा महेन्द्रप्रताप ने शत्रु को घबड़ाहट में डाल दिया, और भारतीय स्वाधीनता संग्राम में वह स्थान बनालिया जो आज तक देशभक्तों द्वारा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

आरम्भिक जीवन—

राजा महेन्द्र प्रताप का जन्म १ दिसम्बर १८८६, में हुआ था। आप एक प्राचीन राज्य-वंश वंशज राजा घनश्याम सिंह के तीसरे पुत्र हैं। बचपन में ही उनको हाथरस के राजा हरनामसिंह ने गोद ले लिया। कुछ बड़े होने पर आपने अलीगढ़ के मुहम्मडन कालेज में शिक्षा पाई। १९०७ में ही आप पत्नी सहित संसार-भ्रमण कर आये जिससे आपका दृष्टिकोण बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकसित हो गया और आप अपने देश के लिये भी योरोप अमरीका के देशों का अनुसरण करने का स्वप्न देखने लगे। शीघ्र ही आप ने अपनी अधिकांश जमींदारी दान करके उसके द्वारा एक टेकनिकल विद्यालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया। इस संस्था की स्थापना सन् १९०८ के मध्य में हो गई। राजा साहब ने उस समय जो निमंत्रण पत्र भेजा था उसमें लिखा कि इस उत्सव में मेरे प्रथम पुत्र का नामकरण संस्कार होगा। इस पर सभी रिश्तेदार तथा मित्र सोने के आभूषण तथा वस्त्र लेकर आये। महामना मालवीय जी भी आगये। पर जब राजा साहब ने यह बतलाया कि उनका यह पुत्र एक शिक्षा संस्थाके रूप में है तो सब लोग बड़े चकराये। "फिर नाम का प्रश्न उठा। कुछ लोगों ने सम्मति दी कि इस का नाम मेरे पिता के नाम के ऊपर रखा जाय। मैंने उत्तर दिया कि सार्वजनिक संस्थाओं को इस प्रकार निजी संस्थाओं का रूप देना कोई अच्छी बात नहीं है। अन्त में "प्रेम महा विद्यालय" नाम ही सर्व सम्मति से पसन्द किया गया।"

उस समय प्रेम महाविद्यालय अपने ढंग की एक ही संस्था थी जिसमें पढ़ाई के साथ विद्यार्थियों को लकड़ी, लोहा, बुनाई, फोटोग्राफी, गलीचा बुनना आदि शिल्प कार्यों में से कोई एक अनिवार्य रूप से सिखाया जाता था। विद्यार्थियों से किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती थी। शिक्षक भी प्रायः देशभक्त और प्रगतिशील विचारों के रखे जाते थे। श्री सम्पूर्णानन्दजी जो बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री तथा राजस्थान के राज्यपाल बने, तथा आचार्य जुगलकिशोर जो वर्षों तक सरकार के शिक्षा मंत्री तथा अन्य पदों पर रहे, प्रेम महाविद्यालय में पर्याप्त समय तक काम कर चुके थे। अंगरेज सरकार इस विद्यालय को सन्देह की निगाह से देखती थी और उनकी रिपोर्ट के अनुसार इसमें कभी बम आदि बनाने का प्रयत्न भी किया गया था। कुछ भी हो राजा महेन्द्रप्रताप ने इसको ऐसे देशभक्त तथा स्वावलम्बी नवयुवक तैयार करने की दृष्टि से ही स्थापित किया था जो मातृभूमि के उद्धार में सहयोग दे सकें। हमने भी इस संस्था का वार्षिकोत्सव सन् १९१३ में देखा था। उस समय एक बड़े हाल में विद्यालय की बनी लोहे, लकड़ी, सूत आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की पचासों प्रकार की वस्तुएँ विक्रयार्थ प्रदर्शित की गई थीं। उसी अवसर पर रात्रि के समय विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों द्वारा खेला गया एक शिक्षाप्रद ड्रामा देखा था जिसमें स्वयं राजा साहब ने जज का 'पार्ट' किया था। इसी उत्सव में हमने स्वामी श्रद्धानन्दजी के पुत्र श्री हरिश्चन्द्र का जोशीला भाषण सुना। अगले वर्ष हरिश्चन्द्रजी राजा साहब के साथ विदेश यात्रा को गये, पर स्वीजरलैण्ड पहुँचने पर किसी कारणवश उनका साथ छूट गया।

राजा साहब के योरोप चले जाने के बाद उनके दो सहकारी निस्स्वार्थ भाव से संस्था का संचालन करते रहे जिससे समस्त देश में उस का नाम और महत्त्व बढ़ता चला गया। समय-समय पर देशके महान नेता इसे देखने आते रहे और इस के उद्देश्य तथा कार्य-प्रणाली के सम्बन्ध में सन्तोष व्यक्त करते रहे। महात्मा गाँधी ने इसे देख कर कहा—"यहाँ कोई ऐसी चीज नहीं है जो देखने योग्य न हो, इसके संस्थापक बहुत अधिक प्रशंसा के पात्र हैं।" महामना मालवीयजी ने लिखा—"मुझे आन्तरिक प्रसन्नता है कि पिछली बार जब मैंने प्रेम महाविद्यालय को देखा तब से इसने बहुत अधिक प्रगति की है।" काशी के बाबू शिव प्रसाद गुप्त ने लिखा "मुझे इस विद्यालय को देख कर बहुत ज्यादा प्रसन्नता हुई। मेरी अभिलाषा है कि इससे निकलने वाले विद्यार्थी अपनी मातृभूमि के प्रति उसी तरह का असीम प्रेम रखें जैसा कि इस के संस्थापक में है।" श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा—"मैंने यहाँ जो कुछ देखा उससे बहुत प्रभावित हुआ और मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ।" पं० जवाहर लाल नेहरू ने लिखा—"मैंने विद्यालय में काम होते देखा और इससे मुझे बड़ी खुशी हुई।" इन महापुरुषों के ये उद्गार इस बात के सुनिश्चित प्रमाण है कि प्रेम महाविद्यालय ने वास्तव में देश को एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की थी, जिसके लिये उस समय तक और कोई सामने नहीं आया था।

समाज--सुधार में अग्रणी—

राजा महेन्द्रप्रताप आरम्भ से ही समाज-सुधार के पक्षपाती रहे। हिन्दू-समाज में अछूतों के साथ किया जाने वाला नीच व्यवहार उनको बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खटकता था. और इस लिये उनकी कट्टरपंथियों से नहीं पटती थी। एक बार जब वे अपनी दो माताओं के साथ द्वारिका गये तो स्टीमर से उतरते ही पंडों ने घेर लिया और पूछने "लगे आपकी जाति क्या है ?" राजा साहब ने कहा—"मैं भंगी हूँ।" पंडा कहने लगे—"तो आप मन्दिर में नहीं जा सकते।" "मैं हर्गिज नहीं जाऊँगा"—राजा साहब ने कहा और बड़ौदा राज्य के डाक-बंगले में जाकर ठहर गये। बाद में उनकी मातायें तो पंडों को समझा बुझा कर मंदिर में चली गईं, पर वे द्वारिका-मंदिर के प्रधान अधिकारी के आग्रह पर भी वहाँ नहीं गये और यही उत्तर दिया कि "जहाँ के लोग मानवता का मूल्य नहीं समझते वहाँ जाना मुझे स्वीकार नहीं।"

राजा महेन्द्रप्रताप का यह कहना एक तरह से ठीक भी था। इससे पहले ही वे आगरा में एक मेहतर के पास बैठकर खा चुके थे। अलमोड़ा में भी उन्हों ने एक "टामटा" के घर का खाना खाया था, जो सब से नीच जाति के माने जाते हैं। उन्होंने देहरादून से हिन्दी और उर्दू में "निर्बल सेवक" नामका पत्र निकाला और बृन्दावन से "प्रेम" साप्ताहिक पत्र प्रकाशित कराया। ये सब दीन-दुःखी और दलित लोगों की सेवा में, उन पर होने वाले अन्यायों का प्रतिकार करने में संलग्न रहते थे। प्रेम महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही अपने बृन्दावन के तीन बाग वहाँ के गुरुकुल को दे दिये। दस हजार रुपया मथुरा के कलक्टर मि० डैम्पियर को इस लिये दिया कि वे उससे उनकी जमींदारी के किसानों के लिये एक सहकारी (को-आपरेटिव) बैंक स्थापित कराने की व्यवस्था करें।

आप सब जातियों और धर्मों में एकता और समानता के सदा से समर्थक रहे हैं। आपने कितने ही प्रचारक नियुक्त करके उनमें से कुछ को रेल द्वारा यात्रा करने और हर एक स्टेशन पर एक दिन ठहर कर प्रेम-धर्म का उपदेश करने को कहा। इसी प्रकार अन्य उपदेशकों को सड़क द्वारा यात्रा करने तथा मार्ग में पड़ने वाले हर एक गाँव में इन सिद्धान्तों का प्रचार करते चलने को कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आप स्वयं भी सेठ बल्देव सिंह भक्तराज तथा स्वामी सोमानन्द को लेकर मुरादाबाद जिले में प्रचारार्थ भ्रमण करने लगे। प्रति दिन शाम को किसी गाँव में भजन, कीर्तन और उपदेश सुनाये जाते थे। एक भजनोपदेशक हरमोनियम बजाता था। सरकारी खुफिया पुलिस वाले भी आपका पीछा करने लगे। एक दिन वे उनसे कहने लगे कि आप मुरादाबाद जाकर मजिस्ट्रेट से मिललें और तब आगे बढ़ें। भेंट होने पर मजिस्ट्रेट ने कहा "आप लोग गौरक्षा का प्रचार करते हो, पर इससे साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलने का भय रहता है, इस लिये मुझे यह प्रचार कार्य पसन्द नहीं आता।" राजा साहब ने उत्तर दिया कि यह रिपोर्ट बिल्कुल झूठ है। हम मनुष्य के प्राणों की कीमत पशु के प्राणों से अधिक मानते हैं और विभिन्न धर्मों में मेल मिलाप का ही प्रचार करते हैं।"

राजा महेन्द्रप्रताप के विचार आरम्भ से राजनीति की तरफ भी थे। सन् १९०६ की कलकत्ता कांग्रेस में, जिसके अध्यक्ष भारत के राजनीतिक गुरु दादाभाई नौरोजी थे और जिसमें प्रथम बार "स्वराज्य" का नाम लिया गया था, आप भी एक दर्शक की हैसियत से शामिल हुये थे। उस समय वे अपनी ससुराल झींद रियासत (पंजाब) में गये थे। झींद के राजा रणवीर सिंह, जो महेन्द्रप्रताप जी के बहनोई लगते थे, अधिकांश राजाओं की मनोवृत्ति के अनुसार 'कांग्रेस' में जाने के विरुद्ध थे, पर ये इस बात की परवाह न करके कांग्रेस में चले ही गये। उस समय एक मात्र बड़ोदा के महाराज सयाजीराव ही ऐसे थे जो ब्रिटिश सरकार का भय छोड़ कर कांग्रेस में गये थे और मंच पर बैठे थे। उनका बहुत जोरों से स्वागत भी किया गया था। सन् १९१० की कांग्रेस में राजा साहब "प्रेम महाविद्यालय" के विद्यार्थियों का एक दल लेकर गये। वहाँ उन्हों ने एक स्वतंत्र पंडाल में "शिक्षा कांफरेंस" के अधिवेशन का आयोजन किया। विद्यालय की बनी चीजें कांग्रेस की प्रदर्शिनी में रखी गईं, और उत्तमता की दृष्टि से उन पर पुरस्कार दिया गया।

यद्यपि वर्तमान समय में हम को ये सब बातें बहुत साधारण प्रतीत होंगी, पर याद रखना चाहिये कि यह वर्णन आज से साठ-पैंसठ वर्ष पहले का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है जब देश मे जागृति बहुत कम हुई थी, भारत ही नहीं समस्त संसार में ब्रिटिश शक्ति का बोलवाला था और हमारे देश के अंगरेज अधिकारी उग्र राजनीति में भाग लेने वालों को विद्रोही समझते थे। उस समय देश के प्रायः सभी छोटे-बड़े राजा अंग्रेज वायसराय तथा गवर्नरों के सामने "जी हजूर" की नीति से काम लेने वाले ही थे। राजा महेन्द्रप्रताप के घर के लोग तथा सम्बन्धी भी उसी श्रेणी के थे और उनके देश-सेवा तथा समाज सुधार के विचारों तथा कार्यों को नापसन्द करते थे और यथाशक्ति विरोध भी करते थे। पर फिर भी वे इसी मार्ग पर चलते रहे और कुछ ही वर्षों में एक प्रसिद्ध विद्रोही के रूप में प्रसिद्ध हो गये, यह कम महत्त्व की बात नहीं है। उस समय यह बात सांसारिक लाभ की दृष्टि से गलत मानी जाती थी, पर आज हम देख रहे हैं कि जब उस समय के राजा महाराजाओं का कोई नाम भी नहीं जानता और स्वतंत्र-भारत में उनका अस्तित्त्व भी नष्ट हो गया, तब राजा महेन्द्रप्रताप देशभक्त के रूप में अब भी सम्मानित माने जारहे हैं। अभी रजत जयन्ती के अवसर पर हजारों बलिदानी क्राँति वीरों के साथ उनको विशेष राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया। यह घटना हमको बतलाती है कि देश और समाज को सेवा में किये गये त्याग और कष्ट सहन के कार्य व्यर्थ नहीं जाते, समय आने पर उनका फल मिलता ही है। उनका सब से बड़ा लाभ तो आत्मसन्तोष होता है, जो बड़े-बड़े करोड़पतियों और शक्तिशाली राष्ट्रों के कर्ताधर्ताओं को भी नहीं मिलता। निस्सन्देह सेवा-धर्म ही मनुष्य के लिये सब से अधिक श्रेयस्कर है।

सन् १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ने के उपरान्त राजा महेन्द्रप्रताप ने लड़ाई में भाग लेने के लिये योरोप जाने की घोषणा की। वे इसके पहले भी दो बार विदेश-यात्रा कर चुके थे; पर इस बार की यात्रा का महत्त्व और रहस्य कुछ और ही था। उन्होंने लड़ाई में भाग लेने की बात कही थी; पर लोगों को यह मालूम न था कि वे किस पक्ष की तरफ से भाग लेंगे ? सरकारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



अधिकारियों के सामने अप्रत्यक्ष रूप से यही प्रकट किया गया कि वे इंगलैण्ड की तरफ से काम करेंगे और उन्होंने टिकिट भी इंगलैण्ड का ही लिया। पर जैसे ही वे स्वीजरलैण्ड पहुँचे उन्होंने जर्मन राजदूत से साँठ-गाँठ आरम्भ कर दी। यद्यपि इस प्रकार का आचरण स्पष्ट रूप से खतरनाक था। और इसीके फल स्वरूप उनको तीस वर्ष तक अपना घरवार और सुख-सुविधायें त्याग कर एक देश से दूसरे देश में मारे-मारे फिरना पड़ा, अनेक बार प्राण-सङ्कट भी उठाना पड़ा; पर देशोद्धार के उद्देश्य से वे इस मार्ग पर चलने से न रुके और न कभी घबराये। अपनी उच्च सामाजिक स्थिति और नाम के साथ 'राजा' का शब्द लगा होने से उनको सभी देशों के उच्च राज्याधिकारियों; विशेष कर वैदेशिक विभाग वालों से मिलने और काम निकालने में सुविधा मिल जाती थी; पर हम यह नहीं कह सकते कि उन्होंने इसका कोई व्यक्तिगत लाभ उठाया। यद्यपि अँगरेजों के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार करने के लिये आपको अनेक देशों से आर्थिक सहायता मिलती रही; फिर भी अनेक बार आर्थिक तङ्गी सहन करनी पड़ती ही थी। सन् १९२७ में आपको पेरिस से बर्लिन जाने के लिए अपनी सोने की चेन बेचनी पड़ी और चीन में भी तिब्बत से लौटने पर खर्च चलाने के लिये दालाई लामा से प्राप्त सोने को बेचकर काम चलाना पड़ा। ऐसे तङ्गी के अवसर चाहे जब आते ही रहते थे। आपको अपना निजी काम तो अपने हाथ से सदा करना ही पड़ता था; क्योंकि इतना पैसा कभी नहीं होता था कि नौकर रखकर काम कराया जा सके। एक ऐसे समुदाय के व्यक्ति ने लिये; जिसमें सभी का एक मात्र उद्देश्य खाना; पीना और मौज उड़ाना रहता है और जो कभी दस-बीस नौकरों के सिवाय गुजारा नहीं कर सकते; इस प्रकार का स्वावलम्बी और सादा जीवन बिताना एक बड़ा त्याग ही कहा जायगा।

पक्के क्रांतिकारी —

यद्यपि सामयिक परिस्थितियों वश महेन्द्र प्रतापजी को प्रत्यक्ष में रायफल, पिस्तौल लेकर अङ्गरेजों से लड़ने का मौका नहीं आया, पर वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रिटिश साम्राज्य के कट्टर विरोधी थे और तीस वर्ष तक विदेशों में रहकर अपना पूरा समय और शक्ति उसे हानि पहुँचाने में ही लगाते रहे। वे अकेले ही उसके विरुद्ध कार्य नहीं करते थे, वरन् अफगानिस्तान, जापान, चीन, तिब्बत आदि देशों में भी वे उसके शोषक और स्वार्थी स्वरूप का भंडाफोड करते रहे और हजारों व्यक्तियों को उसका विरोधी बनाते रहे। जब कभी अवसर मिलता था वे ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रचार अवश्य करते थे। सन् १९२९ में जब आप चौथी बार न्यूयार्क पहुँचे तो आपने अपने भाषण में यही कहा—

"ब्रिटिश साम्राज्य का नाश होकर भारत अवश्य स्वाधीन होना चाहिये। अफगानिस्तान से लेकर मिश्र तक के देशों को ब्रिटिश खतरे से बचाया जाना चाहिये। छोटे से इंगलैण्ड को कनाडा सहित अमरीका में शामिल कर लेना चाहिये और आयरलैण्ड को योरोपियन संघ में शामिल हो जाना चाहिये।"

इसके पश्चात् जब आप कैलीफोर्निया पहुँचे तो वहाँ भी आपने भारत की तत्कालीन स्थिति का वर्णन करते हुये यही कहा—"महात्मा गाँधी का आन्दोलन प्रशंसनीय है। पर उसके द्वारा यदि देश स्वाधीन न हो सका तो जनता अधिक कड़े उपायों से अपने अधिकार को प्राप्त करेगी।"

अफगानिस्तान में जब किसी मित्र ने कहा कि "भारत के स्वतन्त्र होने पर आपको तो सरकार एक बड़ी रियासत देगी ही" तो राजा महेन्द्र प्रताप ने उत्तर दिया कि—मेरी ऐसी कोई अभिलाषा नहीं है। मैं तो अपनी रियासत को त्याग चुका हूँ और अब मुझे कुछ और नहीं लेना है। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि हमारी विजयी सेनायें दिल्ली तक पहुँच जायें और हम देश के शासन की बागडोर राष्ट्रीय कांग्रेस के हाथ में देदें।

एक दूसरे अवसर पर उन्होंने यह भी कहा कि "भारत के किसी सीमाप्रान्त पर आक्रमण करके युद्धक्षेत्र में अंगरेजों से दो-दो हाथ करूँ।" वे सदा ईरान से आसाम तक एक 'आर्यन संघराज्य' का स्वप्न देखा करते थे, और यह जानते हुये भी कि उसका पूरा हो सकना प्रायः असम्भव है आपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



जापान से प्रचारित एक सर्कुलर में लिखा था—"चाहे कोई मेरी बातों को मन के लड्डू खाने की तरह मूर्खतापूर्ण समझे, पर मैं अपने हृदय की भावना को प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। हम ईरान से आसाम तक "आर्यन" की स्थापना करेंगे। हमारा 'आर्यन' आत्मशासित एशिया का एक आत्मशासित भाग होगा, और सभी देश एक 'वर्ल्ड फेडरेशन' (संसार-संघ) में सम्मिलित होंगे। हमारे पास कोई खजाना नहीं है, जिसकी रक्षा की चिन्ता करनी पड़े, न कोई साम्राज्य है जिसकी चौकीदारी करने की आवश्यकता हो। हमारा रास्ता तो सीधा है कि संसार में जो नई-नई घटनायें होती जायें उनसे पूरा लाभ उठायें।" उनका आशय यही था कि यदि जर्मनी, जापान जैसे नये विकसित देशों के प्रहार से ब्रिटिश साम्राज्य खत्म हो जाय तो संसार का नया संगठन हो सकेगा और एशिया के पराधीन अथवा अर्धविकसित देश आगे बढ़ने का अवसर पायेंगे।

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि राजा महेन्द्रप्रताप की कल्पना का एक भाग पूरा हो चुका है। द्वितीय महायुद्ध के फल स्वरूप चाहे जर्मनी की सैनिक शक्ति समाप्त हो गई पर उसने ब्रिटिश-साम्राज्य को खत्म कर दिया। अब इंगलैन्ड का प्रभाव अपने टापू के भीतर ही सीमित रह गया है और वह साम्राज्य "जिसमें सूर्य कभी अस्त नहीं होता था" इतिहास की चीज ही रह गयी है। अब हम उनकी कल्पना के दूसरे भाग की ओर बढ़ रहे हैं और चाहे राजा साहब वृद्धावस्था के कारण उसमें भाग न ले सकें पर मेरी समझ में "संसार संघ" का आगमन ज्यादा दूर नहीं है। यों तो राष्ट्रसंघ (यू० एन० ओ०) उसी उद्देश्य से स्थापित किया गया है, पर उसके हाथ में कोई सैन्य-शक्ति न होने और दो-चार बड़े राष्ट्रों की स्वार्थ पूर्ण नीति के कारण वह अपने उद्देश्य को पूरा करने में असमर्थ है। इसी अन्यायपूर्ण स्थिति के कारण संसार भर में असन्तोष की वृद्धि हो रही है और तीसरे विश्वयुद्ध के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ने लगे हैं। सच पूछा जाय तो भारतीय शास्त्रों की विशिष्ट शब्दावली के अनुसार ये तीनों विश्व-युद्ध युग-परिवर्तन की प्रक्रिया के तीन चरण हैं। हमारे पुराणों के मतानुसार युग-परिवर्तन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अकस्मात् थोड़े से दिनों में नहीं हो सकता, वरन् एक हजार वर्ष के एक युग को बदल कर दूसरे युग की परिस्थितियाँ स्पष्ट होने में सौ वर्ष का समय लगता है, जैसा 'मनुस्मृति' में कहा है—

इतरेषु स सध्येषु स संध्याशेषु च त्रिषु।
एकोपायेन वर्तन्तेसहस्राणि शतानि च ॥

(मनु० १–१७०)

अर्थात्—"त्रेता आदि युग क्रम से ३, २ और १ हजार वर्षों के होते हैं और उनका संधि-काल भी कमशः ३००, २०० और १०० वर्ष का होता है।"

वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि संसार में क्रांतियों का सूत्रपात वर्तमान शताब्दी के आरम्भ से ही हुआ है। सन् १९०५--६ में ही रूस तथा पोर्तुगाल आदि में क्रान्ति हुई और भारत में भी बंग-भंग के फल स्वरूप जो क्रांतिकारी आन्दोलन आरम्भ हुआ वह सन् १९४८ में ब्रिटिश-शासन को हटा कर ही समाप्त हुआ। उसके पश्चात् तो संसार में न जाने कितनी क्रांतियाँ हो चुकी हैं और उनके फल स्वरूप संसार में से पुराने राजा, बादशाहों का पूरी तरह अन्त हो चुका है। पर चूँकि अभी तक संसार की जनता जाग्रत और संगठित नहीं है, इस कारण पुराने ढंग के राजा बादशाहों की जगह नये रंग-रूप वाले "राजा-बादशाह" पैदा हो गये और सामान्य लोगों की दशा में बहुत कम सुधार हो सका। इस लिये यह स्वाभाविक है कि वर्तमान स्थित को बदलने के लिये फिर एक नया मोड़ आवे और उसके बाद हम उस स्थान पर पहुँचें जिस की भविष्यवाणी "मानवतावादी" (one world) वाले कर रहे हैं। हम राजा महेन्द्रप्रताप को भी उसी समुदाय की एक कड़ी मानते हैं और विश्वास करते हैं कि आप का स्वप्न शब्दशः नहीं तो भावनात्मक रूप में अवश्य पूरा होगा।

अंगरेज जासूसों का जाल—

चूँकि राजा महेन्द्रप्रताप ब्रिटिश गवर्नमेंट के खिलाफ प्रचार कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहे थे और उसकी जड़ों को कमजोर करने के लिये "पैन एशियाटिक कान्फ-रेंस" आदि का आयोजन करते रहते थे, इस लिये उसके जासूस भी इनके पीछे पड़े रहते थे। जिन देशों में उनका प्रभाव था वहाँ इनके आने-जाने में बाधा उत्पन्न करते और जहाँ इनके पक्षपाती ज्यादा थे वहाँ धोखे से इनको फँसाने की चेष्टा करते। जब राजा साहब ईरान में "एशियाटिक कान्फरेंस" करने पहुँचे तो वहाँ की सरकार ने इनको यह कह कर रोक दिया कि "इससे योरोपियन लोग नाराज होंगे।" इसी प्रकार तिब्बत में भी इनका प्रवेश इसी आधार पर रोका गया था कि इससे ब्रिटिश सरकार असन्तुष्ट हो जायगी।

पर जहाँ यह उपाय काम नहीं देता था जैसे चीन, जापान, अमरीका आदि, वहाँ अंगरेज जासूस और तरह की चालों से काम लेते थे। एकाध बार तो इन्होंने राजा साहब के कागजात से भरे थैलों की चोरी कर ली। तिब्बत-यात्रा के लिये जब राजा साहब पेकिङ्ग पहुँच कर एक होटल में ठहरे थे तो एक अंगरेज ने आकर कहा--"तुम यहाँ इस तरह का प्रोपैगेण्डा क्यों करते हो ?" इस के बाद वह गालियाँ बकने लगा और धक्का देने लगा। इस पर इन्होंने उसे नीचे गिरादिया और छाती पर चढ़ बैठे। इतने में होटल के नौकर दौड़े हुये आये और इनको उठा कर भोजनालय में चल कर नाश्ता करने की प्रार्थना करने लगे। होटल के मैनेजर ने भी क्षमा प्रार्थना की और कहा कि वह अंगरेज शराब के नशे में धुत्त हो रहा था।

दूसरी घटना शंघाई में हुई जहाँ सन् १९२७ में वे एशियाटिक कान्फरेंस में भाग लेने जापान से गये थे। उनके साथ आठ दस जापानी भी थे। जब वे एक मोटर लंच पर बैठ कर किनारे की तरफ जा रहे थे तो उनकी बगल में होकर एक मोटर बोट निकली, जिसमें दो अंगरेज बैठे थे। उसी समय मोटर लंच के ड्राइवर ने उस को चीनी-शासित भूमि के बजाय अंगरेजों को दिये गये भूभाग (कंशैशन) की तरफ मोड़ दिया और पूरी तेजी से उधर जाने लगा। यह देख कर एक साथी चिल्ला उठा—"धोखा" तुरन्त ही एक जपानी मित्र कूद कर ड्राइवर के पास पहुँचे और छुरा निकाल कर उसे ठीक स्थान पर ले चलने को कहा। तब कहीं नाव अपने गन्तव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थान पर पहुँची। इसी प्रकार एक बार एक रिक्शे वाला बन्दरगाह को जाते समय फ्रेंच कंशैशन के बजाय इनको अंगरेजी कंशैशन में होकर ले चला। जब सन्देह होने पर इन्होंने उसे टोका तब वह ठीक रास्ते पर आया। इस तरह अंगरेज जासूस कितनी ही बार इनको पकड़ लेने का जाल रचते रहे।

"यद्यपि इस बात को स्पष्ट नहीं कहा जाता था, पर भारतवर्ष से बाहर निकलते ही राजा महेन्द्र प्रताप सदा विद्रोहियों और क्रांतिकारियों के सम्पर्क में ही रहे। योरोप पहुँचते ही वे श्यामजी कृष्णवर्मा से मिले थे जो क्रांतिकारियों के गुरु थे। उन्होंने सावरकर, हरदयाल, मदनलाल ढींगरा (इंगलैण्ड में कर्जन वाइली को मारने वाले) आदि को बुला कर क्रांति के-मार्ग में अग्रसर किया था और धन से उनकी सहायता की थी। अमरीका में उनका मुख्य स्थान गदर पार्टी के कार्यालय में रहता था। जापान में वे दिल्ली में लार्ड हार्डिङ्ग पर बम फिकवाने वाले श्री रासबिहारी बोस के घर में रहते थे। चीन में वे प्रायः वहाँ के सेना अधिकारियों के सम्पर्क में रहते थे। रूस, जर्मनी, अफगानिस्तान आदि सभी देशों में अंगरेजों के विरोधी लोगों से ही सम्बन्ध रखते थे। ऐसी दशा में अगर ब्रिटिश सरकार राजा महेन्द्रप्रताप को अपना एक बड़ा शत्रु समझती रही और उनके भारत प्रवेश पर रोक लगाती रही तो इसमें क्या आश्चर्य है?

"वर्ल्ड फेडरेशन" का जन्म—

पर यह सब होते हुये भी राजा महेन्द्रप्रताप कभी संकीर्ण अर्थों में क्रांतिकारी नहीं रहे। अंगरेजों के खिलाफ प्रचार करते हुये भी वे अपना मुख्य लक्ष्य समग्र विश्व की एकता को ही मानते थे। यह भावना उनमें आरम्भ से ही मौजूद थी और इसी प्रेरणा से उन्होंने भारत वर्ष में राजा की हैसियत से रहते हुये भी "प्रेम' 'और "निर्बल सेवक" जैसे पत्र निकाले और मानवमात्र की एकता का प्रचार किया। फिर जब विदेशों में काम करने लगे तो वहाँ भी सब राष्ट्रों का एक संगठन बनाने के सम्बन्ध में विचार करते रहे और इसके लिये एक "मुख पत्र" (Organ) निकालने की योजना बनाते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"इस विचार का जन्म ब्रज (मथुरा बृन्दावन) में हुआ, "वर्ल्ड फेडरेशन" का रूप तेहरान (ईरान) में समझ में आया, इसे सोच समझ कर लेख रूप में तैयार करने का कार्य मास्को (रूस) में हुआ। फिर भी इसके जन्म के लिये एक दाई की अवश्यकता थी, वह काशी के श्रीमान शिवाजी (बा० शिवप्रसाद गुप्त) वे रूप में प्राप्त हुई। उन्होंने इसके प्रकाशन के लिये आवश्यक धन प्रदान किया। इस प्रकार "वर्ल्ड फेडरेशन" (सामयिक पत्र) का आविर्भाव सितम्बर १९२९ में बर्लिन (जर्मनी) में हुआ।"

राजा महेन्द्रप्रताप यद्यपि भारत में प्रवेश नहीं कर सकते थे, पर "वर्ल्ड फेडरेशन" तथा अन्य पर्चों तथा पैम्फलेटों द्वारा वे भारतीय जनता तक अपने विचार बराबर पहुँचाते थे। उनके पर्चे भारतीय समाचारपत्रों के कार्यालयों में पहुँचते रहते थे और उन पत्रों के द्वारा देश भर में उनका प्रचार हो जाता था। हिन्दी में 'आज' (बनारस) "सैनिक" (आगरा) 'प्रताप' (कानपुर) में उनके लेख छपा करते थे। उर्दू में 'जमींदार' 'मिलाप' 'वन्देमातरम्' 'अकाली' 'स्वराज्य' आदि में उनको प्रकाशित किया जाता था। इलाहाबाद के 'चाँद' में भी उनके लेख, सर्कुलर आदि आते थे, जिन्हें इन पंक्तियों का लेखक भी पढ़ता रहता था और उनमें से कुछ प्रकाशित भी किया जाता था। राजा साहब ने 'चाँद' का उल्लेख अपनी "आत्मकथा" में किया है।

नई दुनिया का निर्माण–

राजा महेन्द्रप्रताप ने ऐश आराम की जिन्दगी के स्थान में अपनी खुशी से कठिनाइयों, कष्टों और खतरों की जिन्दगी को स्वीकार किया। वे तीस वर्ष तक एक महान यात्री की तरह निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमते रहे और अपनी समस्त शक्ति तथा साधनों को देश की स्वाधीनता के लिये खर्च करते रहे, इसकी प्रशंसा कौन नहीं करेगा ? उनकी "आत्म-कथा" जैसी प्रेरणाप्रद हैं वैसी ही मनोरंजक भी है। वे किस तरह बड़े-बड़े देशों के शासकों और राज़ नेताओं को अपने शिष्टव्यवहार से सन्तुष्ट करके अपने प्रचार कार्य और आन्दोलन में सहायक बना सके, इससे हम बहुमूल्य शिक्षा प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर सकते हैं। उससे हम सीख सकते हैं कि हर एक सच्चे मनुष्य का प्रथम कर्तव्य अपना स्वार्थ त्याग कर देश और समाज में हित को लक्ष्य में रखना ही है। इसीसे हम स्थायी यश और श्रद्धा के पात्र बन सकते हैं।

पर राजा साहब के इन राजनैतिक कार्यों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, उनके संसारव्यापी शांति और समाज के नव निर्माण सम्बन्धी विचार। न्याय और नीति के सभी अनुयाइयों की तरह वे दुनिया के वर्तमान रंग-ढंग को बहुत दोष पूर्ण मानते हैं। स्वार्थ के कारण मनुष्य दलबन्दी करके आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, इसकी वे सदा निन्दा करते रहते हैं। वे आरम्भ से ही "प्रेम धर्म" के प्रचारक और अनुयायी हैं और सन् १९१६ में ही इस पर एक पुस्तक लिख चुके हैं। नीचे हम कुछ प्रमुख विषयों पर उनके विचार उन्हीं में शब्दों में देते हैं—

मेरा धर्म—

"सभी धर्म कुछ विचारों का संग्रह हैं, जो मानव जाति को उसके कल्याण के उद्देश्य से दिये गये हैं। उनमें जो अन्तर दिखाई देता है उसका कारण यह है कि वे विभिन्न समय और विभिन्न स्थानों पर उत्पन्न हुये हैं। उनमें इस कारण से भी भिन्नता है क्योंकि वे विभिन्न स्वभाव के लोगों को आत्म-सन्तोष देने के लिये बनाये गये हैं। हमको ऐसा सर्वोत्तम धार्मिक सिद्धान्तस्वीकार करना चाहिये जो हमारे पूर्णतः अनुकूल हो और फिर जीवन में उसका व्यवहार करना चाहिये। धर्म का उद्देश्य हमारे आध्यात्मिक स्वास्थ्य की रक्षा करना है। जो लोग धर्म के नाम पर झगड़े करते हैं वे शायद ही धर्म को जानते हों। मेरा किसी भी धर्म के साथ झगड़ा नहीं है, मेरा तो प्रेम-धर्म हैं जिसमें सभी आते हैं।"

मेरा राजनीतिक आदर्श—

"सरकार चाहे छोटी हो या बड़ी उसे अपने क्षेत्र में शान्ति बनाये रखना चाहिये। पर इसके विपरीत इस जमाने की सरकारें शाँति को सबसे अधिक भंग करने वाली हैं। वे बड़े चोरों या डाकुओं की तरह काम करती हैं और पड़ोसियों के क्षेत्र में जबर्दस्ती घुसने का प्रयत्न करती रहती हैं। मेरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ख्याल से इसका कारण यह है कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की खराबी से कुछ बहुतदूषित मनोवृत्तियों के व्यक्ति शासन के सर्वोच्च पदों तक पहुँच जाते हैं और अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। वे राष्ट्र के कर्णधार—संचालक बनकर अपने समस्त अनुयाइयों को लुटेरों के एक दल की तरह बना देते हैं! मेरा मत है कि सबसे पहले तो हम सर्वोत्कृष्ट व्यक्तियों को ही शासनकर्ता और राजनैतिक कार्यकर्ताओं के पद पर नियुक्त करें। वे न तो धन इकट्ठा करें न जायदाद रखें। उनका उद्देश्य एकमात्र मानव-जाति की सेवा करना ही हो। वे सदैव मानव-मात्र को सुखी बनाने का प्रयत्न करते रहें।

राजा महेन्द्रप्रताप के सामाजिक विचार—

'मैं मानव जाति की एकता में विश्वास रखता हूँ कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री को सुखी जीवन बिताने का अधिकार है। जिन व्यक्तियों को प्रकृति की तरफ से या सामाजिक प्रयत्नों से श्रेष्ठ शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं उनका कर्तव्य है कि वे मनुष्य-जाति की भलाई के लिये विशेष रूप से सेवा कार्य करें। जो लोग अपनी प्रकृतिदत्त अथवा समाज द्वारा प्राप्त योग्यता को स्वार्थ-साधन में खर्च करते हैं वे दुष्ट और लुटेरे हैं। मेरा विचार है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति को उसके योग्य उचित काम करने को दिया जाय और सबका उद्देश्य समाज का कल्याण करना हो तो हम सब प्रकार के व्यक्तिगत झगड़ों को मिटा सकते हैं। और यदि हम संसार के समस्त दलों को एक विश्वव्यापी सङ्गठन में बाँध सकें तो सब प्रकार के युद्धों और पारस्परिक कलह का अन्त हो सकता है।"

निस्सन्देह ये सब सिद्धान्त और विचार ऐसे हैं जिनकी सचाई और उत्तमता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। हमारे देश के मनीषियों ने हजारों वर्ष पहले भी इन्हीं बातों का उपदेश दिया था। आज भी हमारे देश में उनकी यह वाणी गूँज रही है—"आत्मवत् सर्व भूतेषु" (सब प्राणियों को अपने ही समान समझो)—"उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्" (सज्जन पुरुषों के लिये समस्त संसार अपने परिवार की तरह है)—"आत्मन्ये प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" (जो व्यवहार हमको बुरा लगता है वह हम दूसरों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ भी न करें) "परोपकाराय सतां विभूतया" (परोपकार ही संसार में सबसे बड़ा धर्म है)—इस प्रकार के अनेक स्वर्ण-सूक्त हमारे प्राचीन साहित्य में भरे पड़े हैं। हम नहीं समझते कि इन उपदेशों तथा राजा महेन्द्रप्रताप जी के सिद्धान्तों में कोई खास अन्तर है। वे भी गत चालीस वर्षों से दुनियाँ के कोने-कोने में भाषणों द्वारा इन्हीं सिद्धान्तों का अलख जगा रहे हैं। उनकी "आत्म-कथा" से हम अनुमान करते हैं कि उन्होंने इस बीच उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये दस हजार भाषण भी दिये हों तो कोई आश्चर्य नहीं। पर खेद है कि इसका कोई सुफल नहीं हुआ। दुनियाँ की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जाती है और चालीस वर्ष पहले की अपेक्षा आज मनुष्यों का जीवन कहीं अधिक सङ्कटपूर्ण और खतरों से भरा हुआ बन गया है।

विश्वव्यापी परिवर्तन का दैवी विधान—

यह सच है कि इस बीच में ज्ञान—विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नति हुई है, जिसके द्वारा, यदि सचाई से प्रयत्न किया जाता तो मानव-मात्र सुखी जीवन बिता सकते थे। पर इसके विपरीत आज संसार के सौ करोड़ से अधिक व्यक्ति भरपेट रोटी, कपड़ा और मकान के लिये भी तरस रहे हैं और उसके फल स्वरूप हर एक देश में अशान्ति, हड़तालों उपद्रवों, खूनी क्रान्तियों, नाशकारी युद्धों का सिलसिला जारी है। इसका कारण यही है कि स्वार्थी शासनकर्ताओं और समाज के कर्णधार बनने वालों ने उपर्युक्त उपदेशों से कुछ लाभ नहीं उठाया और समस्त उन्नति तथा वृद्धि का दुरुपयोग ही किया। राजा महेन्द्रप्रताप की सम्मति है कि वर्तमान दुष्ट प्रकृति के शासकों को हटाकर उनके स्थान में सज्जन और न्याय परायण व्यक्तियों को शासन-संचालक बनाने से इस दुरावस्था का सुधार हो सकता है। पर प्रश्न है कि क्या येस्वार्थी और दुर्दान्त शासक भले आदमियों के कहने से हट जायेंगे? उन्होंने अपने ही जैसे लोगों का इकट्ठा करके एक मजबूत दल बना रखा है, कायदे-कानून अनुकूल बना रखे हैं और सेना तथा सैन्य-सामग्री पर विशेष रूप से अधिकार जमा रखा है। तब संसार में श्रेष्ठ और कल्याणकारी परिवर्तन हो सकने तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



शासन की बागडोर सज्जनों हाथ के में दिये जाने की योजना कैसे पूरी होगी ?

यही कारण है कि अनेक व्यक्ति उपर्युक्त विचारों तथा योजनाओं को काल्पनिक अथवा अव्यवहारिक कहते हैं। उनका मत है कि संसार में सदा से "जिसकी लाठी उसकी भेंस" का सिद्धान्त प्रचलित रहा है और आगे भी वही रहेगा। जर्मनी के निट्शे जैसे दार्शनिकों ने तो खुल्लमखुल्ला यही प्रतिपादित किया है कि किसी भी राष्ट्र के लिये सैन्य-बल को बढ़ाना और युद्ध करना ही सबसे अधिक प्रशंसनीय कर्तव्य है। उसी के आदर्शों से प्रेरित होकर जर्मनी ने दो-बार युद्ध की अभूतपूर्व तैयारी करके विश्व-विजय का अभियान किया और करोड़ों व्यक्ति तथा अरब—खरब धन को स्वाहा करा दिया। यद्यपि आध्यात्मिक दृष्टि से हम कह सकते हैं कि जर्मन-अभियान भी विश्वव्यापी परिवर्तन की दैवी योजना का एक अङ्ग ही है और उसके कारण बड़े-बड़े अहङ्कारियों और निरंकुशों का गर्व चूर-चूर हो गया। पर विश्व-बन्धुत्व के जिस लक्ष्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं और राजा महेन्द्रप्रताप भी जिसका वर्षों से प्रचार कर रहे हैं, वह इस मार्ग पर चलने से प्राप्त नहीं हो सकता। विश्व-शान्ति तथा विश्व-सङ्गठन की आशा तभी की जा सकती है जब युद्धोन्मादियों का नशा दूर हो। पर एक बात स्पष्ट दिखाई देती है कि यह कार्य सदुपदेशों और सद्भावनाओं से पूरा नहीं हो सकता। वर्तमान समय के सैनिकतावादी प्राचीन कथाओं में वर्णित दैत्य-दानवों की तरह हैं जो गोली—गोलों की भाषा में ही बातें करते हैं। और राजनीतिक सफलता के लिये न्याय, नीति, सज्जनता के सब नियमों का उठा कर ताक में रख देते हैं।

ज्यादा पुरानी बातों को छोड़ दीजिये गत वर्ष पाकिस्तानियों ने बङ्गला देश के तीस लाख निर्दोष नर-नारी और बच्चों तक की जिस पाशविकता से हत्या की उसका विरोध सभ्यता के ठेकेदार बनने वाले देशों ने जरा भी नहीं किया। आज युगाण्डा से बिना किसी दोष के ६० हजार एशिया-वासियों को क्रूरतापूर्वक निकाला जा रहा है, पर कोई बड़ा देश उसको धम-काता भी नहीं। कल ही कुछ अरब आतङ्कवादियों ने "विश्व-बन्धुत्व" को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बढ़ावा देने वाले ओलिम्पिक खेलों में घुसकर हत्याकांड मचा दिया, पर सब देश मिल कर उनके कर्ताधर्ताओं को दण्ड देने में असमर्थ रहे। इस सबका कारण यही है कि आजकल के सभ्यताभिमानी देश दूसरों का स्वत्व अपहरण करने में अथवा निर्बल लोगों को मारने में कोई दोष नहीं मानते। सम्भव है वे अपने मन में इस बात पर गर्व करते हों कि संसार में हम ही सबसे शक्तिशाली और श्रेष्ठ हैं। इस दृष्टि से नई दुनिया का निर्माण तब तक सम्भव नहीं जब तक या तो ये सैनिकतावादी आपस में ही टकराकर नष्ट हो जायें या कोई दैवी योजना सज्जनों की सहाता करके उनको विजय प्राप्त करा दे।

साम्यवाद से मतभेद—

राजा साहब ने अपने लेखों में कई स्थानों पर साम्यवाद (कम्यूनिज्म) का विरोध किया है। यद्यपि वे रूस में आठ-दस बार जा चुके हैं और वहाँ के राज्याधिकारियों से अनेक बार सहायता भी ले चुके हैं, पर उनको कार्ल-मार्क्स की कुछ बातें पसन्द नहीं और वे उसको मनुष्यों की विभिन्न श्रेणियों में झगड़ा पैदा करने वाला मानते हैं। राजा साहब की पुस्तकों को ध्यान पूर्वक पढ़ने पर मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि चाहे वे साम्यवाद पर "बल प्रयोग" से काम लेने का आक्षेप करते हैं, पर उन्होंने अपनी जो कुछ योजना लिखी है उसका आशय साम्यवाद के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। मई १९७२ के "वर्ल्डफेडरेशन" में "कुछ मार्ग दर्शक सिद्धान्त" शीर्षक जो लेख छपा है उसमें कहा गया है कि "उत्पादन लोगों के उपयोग के लिये होना चाहिये कि नफा कमाने के नहीं"। "आत्मकथा" में लिखा है "मेरी मान्यता है कि समस्त स्त्री-पुरुषों को इस बात का समान अधिकार है कि अच्छी तरह (सुखपूर्वक) रह सकें।" जो बातें राजा साहब कहते हैं वही साम्यवाद में भी मानी गई हैं कि "प्रत्येक मनुष्य को काम करने की समान सुविधायें मिलनी चाहिये और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के उचित साधन सामग्री (भोजन, वस्त्र, मकान आदि) मिलने चाहियें।" लेनिन का कथन था कि "जब तक सब लोगों को रोटी न मिल जाय तब तक किसी को हलुवा-पूरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खाने का अधिकार नहीं।" मैं नहीं समझता कि कोई न्यायशील इसे बुरा कह सकता है। हमारे भारतीय ऋषि और राजा महेन्द्रप्रताप तो इससे आगे बढ़ कर यह कहते हैं कि "यदि कोई अभावग्रस्त सामने आ जाय तो अपने न्याय-युक्त हिस्से के पदार्थों से भी उसको देदो।" फिर वे साम्यवाद का विरोध कैसे कर सकते हैं? अध्यात्मवाद तो मनुष्य को और भी अधिक त्याग करने का उपदेश देता है।

तब दोनों में मतभेद कहाँ रह गया? राजा साहब ने "अत्यन्त आवश्यक शिक्षा" नामक ट्रैक्ट में लिखा है "बल-प्रयोग से साम्यवादी बनाना पाप है, अत्याचार है। मनुष्यों की प्रकृति में भेद होता है। अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार सबको रहने की स्वतंत्रता होगी। केवल व्यभिचार और अधिक खर्चीले जीवन पर रोक होगी।"

बस यहीं पर मुझे राजा साहब के कथन में विरोधाभास जान पड़ता है। वे यह मानते हैं कि "सब लोगों को सुख पूर्वक रहने का अधिकार है। अधिक खर्चीले जीवन पर रोक लगेगी।" यह सिद्धान्त सर्वथा सत्य है, पर यह कार्य रूप में परिणित कैसे होगा? आज तक किस करोड़पति कारखानेदार अथवा किसी रियासत (स्टेट) के स्वामी राजा महाराजा ने अपनी इच्छा से या सज्जन पुरुषों के उपदेशों से अपनी अतिरिक्त सम्पति अथवा बहुत अधिक सुख-सुविधाओं—ऐश-आराम का त्याग किया है? राजा महेन्द्रप्रताप ने आन्तरिक प्रेरणा से अपनी जागीर लोक हित में लगादी अथवा "महाराज विक्रमादित्य, बहुत बड़े राज्य के स्वामी होने पर भी, अपनी रोटी शारीरिक श्रम से कमाकर ही खाते थे—ये बातें सामान्य नियम के रूप में नहीं मानी जा सकतीं। आप पता लगायें कि ऐसे राजा और कितने हुये हैं? आपको मालूम होगा कि १०० में से ९९ राजा तो प्रजा से बेगार कराके उस धन को सैकड़ों रानियाँ और रखेलें रखने, शराब और अन्य मँहगे से मँहगे पदार्थों का उपभोग करने, तथा सैर तमाशे में अन्धाधुन्ध खर्च करने वाले ही थे। इसी प्रकार बड़े व्यवसायी लाखों मन गल्ला गोदामों में बन्द कर देते हैं और उनके सामने ही करोड़ों लोग भूख से व्याकुल फिरते रहते हैं। पर वे यही चाहते हैं कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे तब निकालें कि जब अकाल की भीषणता के कारण अन्न का भाव अधिक से अधिक मँहगा हो जाय, चाहे इस बीच में उस गोदाम में बन्द गल्ले में से सैकड़ों या हजारों मन गल-सड़ जाय।

मैं पूछता हूँ कि ऐसे व्यक्तियों का क्या किया जाय? क्या वे धर्म और नीति के उपदेशों से मानेंगे? राजा महेन्द्रप्रताप चालीस पचास वर्ष से ऐसे ही सदुपदेश दे रहे हैं और ऐसे ही उत्तम सिद्धान्तों से भरे लाखों पर्चे भी बाँट चुके हैं, पर उनकी बात कितने लोगों ने मानी? मैं तो यही देखता रहता हूँ कि लोग इन सत्य और धर्म पर आधारित बातों की हँसी उड़ाते रहते हैं और राजा साहब को एक जरूरत से ज्यादा भला आदमी बतलाकर मनोरञ्जन किया करते हैं। उनके बहनोई झींद के राजा साहब तो एक बार विदेश के उसी नगर में ठहरने पर भी जिसमें राजा महेन्द्रप्रताप उपस्थित थे, उनसे नहीं मिले। उनको यही डर था कि ऐसे 'विद्रोही' से बात करने पर मेरे ऐश आराम पर भी आँच आयेगी। ऐसी परिस्थिति में ऐसे लोगों के साथ जबर्दस्ती या बल प्रयोग न किया जाय तो क्या किया जाय? रूस की कम्यूनिस्ट सरकार ने शासन की बागडोर हाथ में लेते ही कह दिया था कि "श्रमजीवियों का राज्याधिकार (डिक्टेटरशिप आफ प्रोलीटेरियट) को तब तक कायम रखा जायगा जब तक उसके शत्रुओं को निरस्त न कर दिया जाय।

वास्तव में राजा साहब जो कुछ कहते हैं और भारतीय अध्यात्मवादियों का जो आदर्श है उसको "रामराज्य" के नाम से पुकारा जाता है। योरोप में उसी से मिलती-जुलती चीज "अनार्किज्म" (अराजकतावाद) का सिद्धान्त है। उनका कहना है कि संसार में ऐसा कोई शासन न रहना चाहिये जो मनुष्यों को बल प्रयोग द्वारा किसी खास रास्ते पर चलने को विवश करे। उनके मतानुसार सरकारों के समाप्त हो जाने पर लोग स्वयमेव सहयोग तथा प्रेम पूर्वक रहने लगेंगे। सच्चे साम्यवादी या समाजवादी (सोशलिस्ट) इस सिद्धान्त को ऊँचा और प्रशंसनीय तो मानते हैं, पर उनका कहना है कि यह तभी व्यवहार में आ सकेगा जब पहले साम्यवाद कायम कर दिया जाय और कुछ वर्षों तक सर्वसाधारण को उसके अनुसार चलने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अभ्यास पड़ जाय। इस समय तो परिस्थितियों के कारण मनुष्य घोर स्वार्थी बन गया है और उसको "रेवड़ी के लिये मस्जिद को गिराने" में भी सङ्कोच नहीं होता। ऐसे स्वभाव वालों से सबका न्याययुक्त भाग स्वेच्छापूर्वक दिये जा सकने की बात व्यर्थ ही है।

आगामी सामाजिक व्यवस्था—

राजा साहब ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि सन् १९१० के लगभग उनकी भेंट सरदार जोगिन्दर सिंह से हुई। आपकी बातें सुन कर एक दिन सरदार ने कहा कि "ये बातें तो सोशलिस्टों (समाजवादियों की सी हैं।" उस समय तक इनको पता न था कि "सोशालिज्म" क्या है। इस पर जोगिन्दर सिंह ने इनको कुछ बातें बतलाईं और एक अमरीकन लेखक एडवर्ड बैलैमी की "लुकिङ्ग बैकवर्ड" (सिंहावलोकन) नामक पुस्तक पढ़ने को कहा। राजा साहब ने उसे पढ़कर कहा—"मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि संसार में कुछ अन्य लोग भी ऐसे हैं जो मेरे जैसे ही विचार रखते हैं।"

यह 'लुकिङ्ग बैकवर्ड" पुस्तक मैंने (इस ट्रैक्ट के लेखक ने) भी चालीस वर्ष पहले पढ़ी थी। यह एक उपन्यास के रूप में है, जिसमें एक धनी व्यक्ति चमत्कारी ढङ्ग से सौ-डेढ़ सौ वर्ष अगले जमाने में पहुँच गया और उसने अमरीका में समाजवादी आदर्श पर स्थापित हुये समाज को देखा, जिसमें सबलोग समान अधिकार सम्पन्न और सुखी थे। व्यापारिक धोखा-धड़ी, मालिक मजदूर के झगड़े, राजनैतिक दाव-घात आदि का वहाँ नाम भी न था। भोजन, वस्त्र, मकान शिक्षा, मनो रंजन, समाज-सेवा के कार्य आदि सब बातों की ऐसी व्यवस्था की गई थी कि जिसमें सभी देशवासी भाग ले सकते थे और पूरी तरह लाभ उठा सकते थे। ऐसी पुस्तकों को अँगरेजी में 'यूटोपिया' (Utopia) कहते हैं, क्योंकि उस नाम का एक काल्पनिक साम्य-वादी समाज का दिग्दर्शन कराने वाला उपन्यास सर टामस मूर ने सन् १५२० के लगभग लिखा था। इस तरह के उपन्यासों की संख्या अंगरेजी में कई सौ होगी जिनमें लेखकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से भावी-समाज का चित्र खींचा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। इनमें विलियम मोरिस नामक लेखक की 'न्यूज फ्राम नो व्हिअर" (News from nowhere) और एच० जी० वेल्स की "दी शेप आफदी थिंगस्ट्र कम" (The shape of the things to come) अधिक प्रसिद्ध हैं।

मेरा अनुमान है कि राजा साहबने "लुकिङ्ग बैकवर्ड" तथा अन्य कुछ इसी श्रेणी की पुस्तकों को पढ़कर भावी मानव-समाज का एक सुखद चित्र बना लिया है और उसी को साकार रूप में देखने की अभिलाषा किया करते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि उनकी यह विचारधारा बड़ी प्रशंसनीय है और भगवान शीघ्र ही एक दिन ऐसा लायेंगे जब यह प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ने लगेगी। मैं स्वयं इस तरह के साहित्य को पढने का शौकीन हूँ और लगभग बीस पुस्तकें तो इस तरह की पढ़ ही चुका हूँ। पर मैंने अपनी रचनाओं (सतयुग) (मासिक पत्र तथा 'कल्कि पुराण' आदि) में यह भी स्पष्ट लिख दिया है कि "इस सुन्दर, सुखद सतयुगी प्रदेश में पहुँचने से पूर्व हमको 'रक्त सागर" तैरकर पार करना पड़ेगा।" इस प्रकार भावी संसार के समाज और शासन पद्धति के जो चित्र खींचे जाते हैं उनमें काफी भिन्नता है। जिस प्रकार साम्यवादियों ने साम्यवाद पर आधारित समाज की कल्पना की है उसी प्रकार पूँजीवादियों तथा अधिनायक शासनवादियों (डिक्टेटरशिप वालों) ने भी अपने विचारों के अनुकूल कल्पना करके उपन्यास लिखे हैं। फिर हम यह भी नहीं कह सकते कि सब लोगों ने समाजवाद की प्रशंसा ही की है। अनेक लेखकों ने यह सिद्ध करने की भी चेष्टा की है कि साम्यवाद के कारण लोगों को अधिक और अच्छा काम करने की प्रेरणा मिलनी बन्द हो जायगी, और एक समय आयेगा जब लोग घोर अकर्मण्य, अनुत्साही और दीन-हीन बन जायेंगे। इसी तरह पूँजीवाद के विसेवी एक लेखक ने कहा है कि पूँजीवाद के बढ़ते जाने से अन्त में समस्त मजदूर पूरी तरह से गुलामों की सी हालत में पहुँच जायेंगे और देश का सब से प्रमुख धनिक-समुदाय अपने विशाल साधनों द्वारा उनको पददलित बनाकर रखेगा।

हम जानते हैं कि राजा साहब ने इस विषय में इतनी अधिक खोज बीन नहीं की है और वे मानव-जाति के एक हितैषी की दृष्टि से ही संसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में समता, न्याय और स्थायी शान्ति स्थापित करने की बात कहते हैं। कि जहाँ तक मुझे उनकी बातों से जान पड़ा, वे साम्यवाद या कम्यूनिज्म का उतना विरोध नहीं करते जितना कि कार्लमार्क्स का करते हैं। उनके मतानुसार मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन के लिये जो शक्ति-प्रयोग की सलाह दी है, वह मानवता की निगाह से दोष पूर्ण है। इस विषय का स्पष्ट विवेचन हम ऊपर ही कर चुके हैं। इस प्रकार के परिवर्तन सब जगह एक साथ और पूर्ण रूप से एक से नहीं होते। वरन् हर देश में वहाँ की परिस्थितियों, साधनों और जनता की प्रकृति का भी बहुत कुछ प्रभाव उन पर पड़ता है, इसलिये उनमें थोड़ा-बहुत अन्तर पड़ना अनिवार्य है। उदाहरण के लिये हमारे सामने रूस और चीन दो देश हैं, जो सर्वोपरि कम्यूनिस्ट माने जाते हैं, पर दोनों की कार्य-प्रणाली और सिद्धान्तों में भी बहुत अधिक अन्तर पैदा हो गया है। फिर राजा साहब तो मनुष्य मात्र के लिये अपने समान मानकर ही व्यवहार करने को कहते हैं—

"हमको 'हम" (मेरा) में न फँस जाना चाहिये, दूसरों की ओर भी देखना चाहिये। यदि ईश्वर की कृपा से आपका अपना घर है, तो सोचिये क्यों नहीं प्रत्येक व्यक्ति का घर होना चाहिये ! मनुष्य बहुधा अपना-अपना सोचता है, दूसरों का नहीं, इसी कारण संसार में अधिक दुःख है। इस छोटी-सी दुनिया में मनुष्य-मात्र को रहने का अधिकार है।" ("अत्यंत आवश्यक शिक्षा" पृष्ठ ६)

अब इस विषय में अधिक बहस करने की आवश्यकता नहीं कि साम्यवाद तथा राजा साहब के विचारों में कितना अन्तर है ? दोनों का स्पष्ट आशय तो यही है कि सबके साथ न्याय और उदारता का व्यवहार किया जाय तथा किसी को गरीबी का कष्ट न उठाना पड़े। पर कम्यूनिस्ट जहाँ इस उद्देश्य को कानून और शक्ति द्वारा पूरा करने की बात कहते हैं, वहाँ राजा साहब और प्राचीन भारतीय मनीषी, ईश्वर, धर्म, कर्तव्य और मानवता के नाम पर इसका प्रतिपादन करते हैं। हम भारतीय संस्कृति के आदर्श को निश्चत रूप से ऊँचा और मानव-मात्र के लिये कल्याणकारी मानते हैं, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यदि व्यवहार से ऐसे लोगों से पाला पड़े जिनमें मनुष्यत्व की भावना नष्ट गई हो और जो निरीह जनता के साथ पाशविक अत्याचार करने में पदद-लित करने में जरा भी शर्म तथा हिचकिचाहट अनुभव करते हों तो उसकी मुकाबला शक्ति से ही किया जाना चाहिये, फिर चाहे ऐसे अत्याचारी विदेशी हों या स्वदेशी।

धार्मिकता की भावना—

यद्यपि राजा साहब हिन्दू धर्म को सङ्कीर्ण अर्थों में नहीं मानते और छुआछूत तथा नीची मानी जाने वाली जातियों के साथ हीनता के व्यवहार का विरोध वे अपनी युवावस्था से ही करते आये थे,तोभी उनको धर्म का विरोधी नहीं कहा जा सकता। वे जगत का निर्माण करने वाली चैतन्य सत्ता और उसकी न्याय-नीति में विश्वास रखते हैं और अपने सिद्धान्तों और आन्दोलन का आधार उसी को मानते हैं। वे सब जातियों के साथ समानता और भाईचारे का व्यवहार इसी तथ्य पर उचित बतलाते हैं कि सबका पैदा करने वाला तो एक ईश्वर ही है। अपनी "अत्यन्त आवश्यक शिक्षा" में इस विषय का विवेचन करते हुये उन्होंने लिखा है—

"देखिये ईश्वर की कृपा से सूर्य सबको प्रकाश देता है, मनुष्य-मात्र वर्षा से लाभ उठाते हैं, मनुष्य-मात्र के लिये वायु है, भूमि भी मनुष्य-मात्र के लिये है, यद्यपि उसे बराबर नहीं बाँटा जा सकता। सूर्य न होता तो हम न होते, वायु न होती तो हम न होते, वर्षा हमको जीवित रखती है पृथ्वी हमको भोजन देती है।

"पर हमको 'हम' ही दीखते हैं! हम समझते हैं कि हम सब कुछ कर सकते हैं। हम कहते हैं हम कि प्रकृति से लड़ रहे हैं, हमने उस पर यह या वह विजय प्राप्त करली! मूर्ख हम! हमको याद रखना चाहिये कि हम तो प्रकृति के खिलौने हैं। प्रकृति की महान मशीन के पुर्जे हैं!"

एक अन्य स्थान पर राजा साहब ने ईश्वरीय अवतारों की ओर संकेत करते हुये लिखा है—"यह वाद विवाद मत करो कि ईश्वर एक है, दो हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



या तीन हैं। यह व्यर्थ की उलझन है। जिसने भी यह रचना रची अथवा जिन नियमों के अनुसार यह रचना हुई, वे चाहते हैं रचना की भलाई। वे देखना चाहते हैं सुखी समाज। पर मनुष्य अपनी त्रुटियों के कारण दुःखी होता है। मनुष्य को यह स्वतंत्रता है कि भला करे या बुरा। किन्तु रचने वाला त्रुटियों से उत्पन्न बुराई को ठीक करता चलता है। ईश्वर या प्रकृति कुछ ऐसे व्यक्तियों को पैदा करते हैं जो समाज की सेवा करते हैं। उनको समाज-सेवा में ही आनन्द आता है।"

"देखिये इतिहास। कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, चार बड़े समाज-सेवक दीखते हैं। ऐसे महान पुरुष जिनको आज-भी करोड़ों लोग अवतार देवता, पैगम्बर कहते हैं; इन महान आत्माओं से लेकर आजभी यहाँ, वहाँ, जगह-जगह गुरु मौजूद हैं, जैसे गाँवों या नगरों में अनेक वैद्य और डाक्टर हैं। ईश्वर ने ही कृपा कर मेरे द्वारा संसार को प्रेम-धर्म दिया "संसार संघ की योजना सिखाई और उत्पन्न किया नवीन विचार-विज्ञान। ईश्वर की कृपा से ही प्रकृति के अनुसार यह 'अत्यन्त आवश्यक शिक्षा' दे रहा हूँ।"

हम स्वीकार करते हैं कि इस प्रकार का दृढ़ आत्म विश्वास किसी सच्चे जन-सेवक के लिये आवश्यक है। फिर जो कुछ उच्च कोटिका का कार्य हमसे बन पड़ता है वह ईश्वर की प्रेरणा के अतिरिक्त माना भी और क्या जा सकता है! ऐसे संसार-सेवक निश्चय ही हमारे लिये वन्दनीय हैं।

कुछ भी हो हम राजा महेन्द्रप्रताप के विचारों और सिद्धान्तों को किसी दृष्टि से अनुचित या हानिकर नहीं कह सकते। गायत्री तपोभूमि में "युग निर्माण योजना" भी लगभग यही प्रचार कर रही है। वह समस्त संसार की एकता, विश्व-शासन, विश्व-भाषा, समस्त धर्मों (मजहबों) में एकता का प्रचार कर रही है और लाखों व्यक्ति उससे प्रभावित होकर उसके प्रचार में सहयोग दे रहे हैं। इस प्रकार के प्रचार-कार्य का फल चाहे तुरन्त न दिखलाई पड़े पर लोगों को कल्याणकारी सन्देश सुनाते रहना भी महत्त्वपूर्ण बात है। उसका असर अन्तर्मन पर तो पड़ता ही है और समय आने पर वह प्रकट भी होता है। इस दृष्टि से राजा महेन्द्रप्रताप ने गत चालीस वर्षों से 'प्रेम धर्म' का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो प्रचार किया है और अब भी कर रहे हैं, वह व्यर्थ नहीं कहा जा सकता। आपके ही एक लेख में कहा गया है—

"जो कुछ भी देश या संसार में हो रहा है वह सब विचार शक्ति से ही हो रहा है। विचार ही मेल कराते हैं और विचार ही लड़ाते हैं। यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिये कि यदि यह विचार विश्वास बन जाय तो मनुष्यों का लड़ना रुक जायगा।"

"युग निर्माण योजना" भी विचारों की शक्ति में पूरा विश्वास रखती है। और जनता को न्याय तथा नीति पर आधारित एक नई दुनिया बनाने का सन्देश सुना रही है, फिर वह चाहे 'शान्ति' द्वारा प्राप्त हो अथवा 'क्रान्ति' द्वारा। इस लिये जिस दिन राजा महेन्द्रप्रताप के मानव-जाति की एकता और 'प्रेम धर्म' के विचार, जिस किसी मार्ग से, सफल हो जायेंगे वह दिन वास्तव में ही सौभाग्य का होगा।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिए आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिए आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन-गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिए जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में है। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

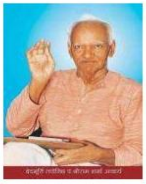

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org